बी० ए० भाग - II

प्रथम प्रश्न पत्र

प्रश्न - "निराला प्रगतिशील चेतना के कवि हैं।" इस कथन के आधार पर निराला के काव्य की प्रवृत्तियों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर -

हिन्दी साहित्य में प्रगतिवाद उस काव्य-धारा का नाम है जो छायावाद के समाप्तिकाल (1935 ई.) के आसपास मार्क्सवादी दर्शन के आलोक में सामाजिक चेतना और भावबोध को अपना लक्ष्य बनाकर चली।

डॉ० नगेन्द्र के अनुसार -

"प्रगतिवाद छायावाद की भस्म से नहीं पैदा हुआ - वह उसके यौवन का गला घोंटकर ही उठ खड़ा हुआ।"

इस तथ्य को उजागर करते हैं। यदि छायावाद सूक्ष्म का स्थूल के प्रति विद्रोह था तो प्रगतिवाद स्थूल का सूक्ष्म के प्रति विद्रोह है।

निराला के काव्य में प्रचलित व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह का स्वर इतनी सशक्तता के साथ सुनाई पड़ा कि उन्हें ही प्रगतिवादी आन्दोलन का अग्रदूत कहा जाय तो अत्युक्ति नहीं है। निराला जी की कविताएँ प्रथम कोटि की प्रगतिशील रचनाएँ हैं, क्योंकि उनमें रूढ़िगत प्रगतिवाद या किसी राजनीतिक दल के प्रति आस्था के दर्शन नहीं होते।

निराला के काव्य का मूल्यांकन

प्रगतिवाद के निम्नलिखित तत्वों के आधार पर किया जा सकता है; —

1- रूढ़ि का विरोध —

निराला ने अपनी संस्कृति का दम्भ भरने वालों को ललकारते हुए लिखा है — "हजार वर्ष से सलाम ठोंकते-ठोंकते नाक में दम हो गया, अपनी संस्कृति लिए फिरते हैं। ऐसे लोग संसार की तरफ से आँखे बन्द कर अपने ही विचार के व्याघ्र बन बैठे रहते हैं, अपनी ही दिशा के ऊँट बनकर चलते हैं।"

निराला का यह रूढ़ि विरोध 'सरोज स्मृति' में दिखाई देता है —

"फिर सोचा — मेरे पूर्वजगण,
गुजरे जिस राह, वही शोभन,
होगा मुझको, यह लोक-रीति।

2. शोषित वर्ग के प्रति सहानुभूति —

निराला की कविताओं में शोषित और दुःखी जनों के प्रति गहरी सहानुभूति है। भिक्षुक, तोड़ती पत्थर तथा विधवा कविताएँ इस प्रवृत्ति के सुन्दर उदाहरण हैं, जैसे —

वह आता
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता
पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक
चल रहा लकुटिया टेक।

- भिक्षुक।

3. पूँजीपति वर्ग के प्रति घृणा —

निराला ने अपनी पैनी दृष्टि से समाज के सच्चे रूप को देखा था और अपने गरीब जीवन में उसकी गरीबी को सहा था। उन्होंने 'सहस्राब्दि' में भारतीय समाज का बहुत ही सटीक विश्लेषण प्रस्तुत किया है। उन्होंने कई कविताओं में वर्तमान सामाजिक शोषण का चित्र खींचते हुए यह दिखाया है कि संसार में विजयी कहलाने वाले लोग दूसरों का खून पीकर ही बड़े बनते हैं —

भेद कुल खुल जाए वह सूरत हमारे दिल में है।
देश को मिल जाए जो पूँजी तुम्हारी मिल में है।।

(4) ग्रामीण वर्णन —

देवी सरस्वती कविता में निराला ने ग्रामीण जीवन का सुन्दर वर्णन किया है। वे सरस्वती का निवास - गृह उस ग्राम्य जीवन को बताते हैं जहाँ —

डाले बीज चने के, जौ के और मटर के,
गेहूँ के अलसी राई सरसों के कर से।
सुख के आँसू दुःखी किसानों के जाया के,
भर आये आँखों में, खेती की माया से।

5. क्रान्ति का आह्वान —

समाज के शोषण का अन्त करने के लिए प्रगतिवादी कवि क्रान्ति का आह्वान करता है। वह श्यामा से प्रलयंकारी नृत्य का आह्वान करते हैं —

एक बार बस और नाच तू श्यामा ।
सामान सभी तैयार,
कितने ही हैं असुर, चाहिए कितने तुमको हार !

(6) वेदना और निराशा —

सामाजिक विषमताओं को देखकर कवि निराला का मन खिन्न हो जाता है। उनके 'अपरा' में व्यक्तिपरक वेदना और निराशा का आधिक्य है। —

स्नेह निर्झर बह गया है ।
रेत ज्यों तन रह गया है ।।

(7) साम्यवाद का गुणगान —

प्रगतिवाद कवि की यह धारणा है कि समाज के समस्त कष्टों का मूल आर्थिक विषमता है और समाज के समस्त अनर्थों का एक ही उपचार है — साम्यवाद। 'वनबेला' कविता में साम्यवाद की प्रशंसा करते हुए निराला ने लिखा है —

फिर पिता संग,
जनता की सेवा का व्रत लेता उमंग,
करता प्रचार,
मंच पर खड़ा हो साम्यवाद इतना उदार ।

8- नारी का मांसल चित्रण —

प्रगतिवादी कवि की ओर शोषित और त्रासित नारी के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करता है, तो दूसरी ओर वह उसको भोग की सामग्री मानता है और यथार्थवादी वर्णन के नाम

पर उसके मांसल शरीर का चित्रण करता है।
— श्याम तन भर बँधा युवा यौवन

9 - उद्‌बोधन, देश भक्ति, सामाजिक कल्याण के भाव —

प्रगतिवादी दोनों दिशाओं को अपनाता है। निराला ने भी दोनों दिशाएँ अपनाई हैं। ध्वंस की भेरी बजाते समय वह शिव और श्यामा का आह्वान करता है। निराला परतन्त्रता को दूर करने के लिए भारत के निवासियों को ललकारते हैं। "जागो फिर एक बार" नामक कविता में ऐसी ही ललकार है।

[signature] 28/09/2020

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया